

# एक चुनौती के रूप में गरीबी

## अध्याय का अवलोकन

यह अध्याय गरीबी पर केंद्रित है, जो स्वतंत्र भारत के सामने एक बड़ी चुनौती है। यह गरीबी को एक बहुआयामी समस्या के रूप में जांचता है जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लोगों को अलग-अलग रूप से प्रभावित करती है। अध्याय:

- वास्तविक जीवन के उदाहरणों के माध्यम से गरीबी को दर्शाता है।
- बताते हैं कि सामाजिक वैज्ञानिक गरीबी का विश्लेषण कैसे करते हैं।
- गरीबी रेखा अवधारणा का उपयोग करते हुए भारत और विश्व स्तर पर गरीबी के रुझान पर चर्चा की।
- गरीबी के कारणों की जांच करता है।
- सरकार के गरीबी विरोधी उपायों का वर्णन करता है।
- स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में अभाव पर जोर देते हुए, आय गरीबी से मानव गरीबी तक चर्चा का विस्तार करता है।

## परिचय

- गरीबी रोजमर्ग की जिंदगी में दिखाई देती है, उदाहरण के लिए, गांवों में भूमिहीन मजदूर या शहरों में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले।
- नीति आयोग गरीबी को मापने के लिए बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) का उपयोग करता है।
- भारत में MPI रुझानः
  - 2005-06 → 55%
  - 2015-16 → 25%
  - 2019-21 → 15%
- जल्द ही सिंगल डिजिट तक पहुंचने की उम्मीद है।

## गरीबी के दो विशिष्ट मामले

### 1. शहरी मामला – राम सरन (झारखण्ड)

- उम्र 33, दिहाड़ी मजदूर, अनियमित रूप से 3,500/ माह कमाती है।
- छह + बुजुर्ग माता-पिता के परिवार का समर्थन करता है।
- एक कमरे की किराए की झोपड़ी में रहता है।
- पती अंशकालिक नौकरानी के रूप में 1,500/ माह कमाती है।
- बड़ा बेटा चाय की दुकान (700/ माह) में मदद करता है, बेटी स्कूल जाती है।
- प्रति व्यक्ति कपड़े के केवल दो सेट; जूते एक विलासिता हैं।
- भोजन: दाल और चावल दिन में दो बार; सभी के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

### प्रमुख मुद्दे:

- भूमिहीनता → कोई अपनी जमीन नहीं है
- अनियमित काम → बेरोजगारी
- बड़ा परिवार → आर्थिक दबाव
- कम साक्षरता → बच्चे पूरी तरह से पढ़ाई करने के बजाय मदद कर रहे हैं
- खराब पोषण → अल्प भोजन
- लाचारी → कोई स्थिर आजीविका नहीं है

### 2. ग्रामीण मामला – लाखा सिंह (उत्तर प्रदेश)

- भूमिहीन, बड़े किसानों के लिए काम करते हैं; आय अनियमित होती है, अक्सर वस्तु के रूप में भुगतान किया जाता है।
- छह लोगों का परिवार 2 भोजन/ दिन पर जीवित रहता है।
- कुच्छि झोपड़ी में रहता है।
- परिवार की महिलाएं चारा, जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करती हैं; बच्चे अक्सर घर पर ही रहते हैं।
- पिता की तपेदिक से मृत्यु हो गई; मां बीमार है।
- बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन कुल मिलाकर परिवार में कपड़े, साबुन और तेल जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है।

### प्रमुख मुद्दे:

- भूमिहीनता काम के लिए दूसरों पर निर्भर →
- अनियमित काम → बेरोजगारी
- बड़ा परिवार भारी आर्थिक बोझ →

- कम साक्षरता → सीमित स्कूली शिक्षा
- खराब स्वास्थ्य/ पोषण → बीमारी, उपचार की कमी
- लाचारी → कोई संपत्ति या सामाजिक सुरक्षा नहीं है

## गरीबी के आयामों पर प्रकाश डाला गया

- भूख और कुपोषण
- आश्रय की कमी
- स्वास्थ्य देखभाल का खर्च उठाने में असमर्थता
- स्वच्छ पानी और स्वच्छता की कमी
- अनियमित नौकरियां और कम मजदूरी
- सामाजिक बहिष्कार और लाचारी

**महात्मा गांधी** ने इस बात पर जोर दिया था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी मिलती है जब सबसे गरीब व्यक्ति मानवीय पीड़ा से मुक्त हो।

## सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा देखी गई गरीबी

गरीबी के बारे में नहीं है - यह बहुआयामी है। संकेतकों में शामिल हैं:

### 1. आय और उपभोग

- पारंपरिक उपाय, लेकिन अकेले अपर्याप्त।

### 2. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई)

- **स्वास्थ्य:** पोषण, बाल / किशोर मृत्यु दर, मातृ स्वास्थ्य
- **शिक्षा:** स्कूली शिक्षा के वर्ष, स्कूल में उपस्थिति
- **जीवन स्तर:** खाना पकाने का ईंधन, स्वच्छता, पेयजल, आवास, बिजली, संपत्ति, बैंक खाता

### 3. सामाजिक बहिष्करण

- गरीब लोग केवल गरीबों के बीच रहते हैं, सामाजिक समानता से बाहर हैं।
- गरीबी का कारण और प्रभाव दोनों हो सकता है।
- उदाहरण: भारत में जातिगत भेदभाव।

### 4. भेदभाव

- कुछ समूहों (पिछड़ी जातियां, विधवाएं, शारीरिक रूप से विकलांग) के गरीब रहने की संभावना।
- उपलब्ध विकल्पों पर निर्भर: संपत्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी के अवसर।
- प्राकृतिक आपदाओं या आर्थिक झटकों के दौरान भेदभाव बढ़ जाती है।
- ❖ **गरीबी रेखा**
- **परिभाषा:** गरीबी रेखा भोजन, कपड़े, आवास, ईंधन, शिक्षा और विकित्सा देखभाल जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक आय या खपत का न्यूनतम स्तर है।
- **उपभोग-आधारित दृष्टिकोण:** घरेलू व्यय के आधार पर गरीबी को मापता है। एक व्यक्ति गरीब है यदि उसकी आय या खपत "न्यूनतम आवश्यक स्तर" से नीचे आती है।
- **विविधता:** गरीबी रेखा आर्थिक विकास और सामाजिक मानदंडों के आधार पर देशों और समय में भिन्न होती है। उदाहरण के लिए, भारत में कार का मालिक होना एक विलासिता है, लेकिन अमेरिका में, इसे आवश्यक माना जा सकता है।
- **कैलोरी की आवश्यकता:** भारत में, गरीबी रेखा की गणना ऐतिहासिक रूप से कैलोरी की आवश्यकता मानी जाती है:
  - ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कैलोरी/ व्यक्ति/ दिन →
  - शहरी क्षेत्रों → 2100 कैलोरी/ व्यक्ति/ दिन
- **मौद्रिक अनुमान:** मौद्रिक गरीबी रेखा का अनुमान लगाने के लिए भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुओं की भौतिक मात्रा को बाजार की कीमतों से गुणा किया जाता है।
- ❖ **बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI)**
- इसे नीति आयोग द्वारा आय-आधारित गरीबी उपायों के प्रकर के रूप में विकसित किया गया है।
- स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में समूहीकृत 12 संकेतकों का उपयोग करता है।

## स्वास्थ्य

1. पोषाहार
2. बाल-किशोर मृत्यु दर
3. मातृ स्वास्थ्य

## पढ़ाई

- 4. स्कूली शिक्षा के वर्ष
- 5. स्कूल में उपस्थिति

### जीवन स्तर

- 6. खाना पकाने का ईंधन

- 7. स्वच्छता

- 8. पीने का पानी

- 9. फ्लैट आदि

- 10. विद्युतधारा

- 11. संपत्ति

- 12. बैंक खाता

- इनमें से किसी भी सकेतक से वंचित परिवार को **बहुआयामी रूप से गरीब माना जाता है।**

### खपत-आधारित और एमपीआई के बीच अंतर:

- उपभोग आधारित गरीबी केवल आय/व्यय पर केंद्रित है।
- एमपीआई स्वास्थ्य, शिक्षा और रहने की स्थिति में अभाव को पकड़ता है, गरीबी की व्यापक समझ प्रदान करता है।

### ❖ भारत में गरीबी का अनुमान

- हेड काउंट रेशियो (एचसीआर): गरीबी रेखा से नीचे की आबादी का अनुपात।

### • उपभोग-आधारित एचसीआर प्रवृत्ति (1993-2012):

- 45% → 22% से घटाया गया
- जनसंख्या वृद्धि के कारण गरीबों की संख्या अधिक (~ 407 मिलियन) बनी रही।

### • बहुआयामी गरीबी (2015-21):

- 25% → 15% से अस्वीकार किया गया
- 13.5 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बच गए, ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से सुधार देखा गया।

### ❖ अंतर-राज्यीय असमानताएं

- गरीबी सभी राज्यों में असमान है।

### • एचसीआर < 10% (2019-21): कर्नाटक, तमिलनाडु, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र।

### • उच्च गरीबी वाले राज्य: बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान।

### • मतभेदों के कारण:

- केरल → मानव संसाधन विकास
- पश्चिम बंगाल → भूमि सुधार
- आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु → सार्वजनिक खाद्य वितरण

### ❖ भारत में कमजोर समूह

- सबसे कमजोर सामाजिक समूह: अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी)।

- सबसे कमजोर आर्थिक समूह: ग्रामीण कृषि मजदूर, शहरी आकस्मिक मजदूर।

### • डेटा हाइलाइट्स:

- औसत गरीबी: 22%
- अनुसूचित जनजाति के परिवार: 43% गरीबी रेखा से नीचे
- शहरी आकस्मिक कर्मचारी: 34%
- ग्रामीण आकस्मिक कृषि श्रमिक: 34%
- अनुसूचित जाति के परिवार: 29%

- दोहरा नुकसान: भूमिहीन और सामाजिक रूप से वंचित (एससी/एसटी) होने से गरीबी और बढ़ जाती है।

- परिवारों के भीतर, महिलाओं, बुजुर्गों और महिला शिशुओं को अक्सर संसाधनों तक असमान पहुंच का सामना करना पड़ता है।

### ❖ वैश्विक गरीबी परिवर्ष

- गरीबी केवल भारत के लिए ही नहीं है।

- अंतर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा: \$ 2.15 प्रति व्यक्ति / दिन (विश्व बैंक, अत्यधिक आर्थिक गरीबी के लिए)।

- **वैश्विक रुझान:** अत्यधिक गरीबी 16.27% (2010) से घटकर 9.05% (2019) → आई।
- **क्षेत्रीय अंतर:**
  - आर्थिक विकास और मानव संसाधन विकास के कारण चीन और दक्षिण पूर्व एशिया में भारी कमी → /
  - चीन → 2020 में 0.1% गरीबी है।
- **\\$ का उद्देश्य:** तुलना के लिए देशों में गरीबी माप को मानकीकृत करता है।
- ❖ **वैश्विक गरीबी के रुझान**
- **दक्षिण एशिया (श्रीलंका, नेपाल, बांगलादेश, भूटान, अफगानिस्तान, मालदीव):**
  - गरीबी 2017 में 13% से घटकर 2021 में 11% → गई।
  - गरीबों की संख्या 233 मिलियन से घटकर 207 मिलियन → हो गई।
- **देश-वार गरीबी (हेड काउंट रेशियो, \$2.15/दिन, PPP):**

भूक्षेत्र	% जनसंख्या \$2.15/दिन से नीचे	सालों
नाइजीरिया	30.9	2018
बांगलादेश	9.6	2022
भारत	11.9	2021
पाकिस्तान	4.9	2018
चीन	0.1	2020
ब्राज़ील	5.8	2021
इंडोनेशिया	2.5	2022
श्रीलंका	1.0	2019

- **क्षेत्रीय रुझान (2005-2019):**
  - गरीबी में गिरावट: दक्षिण एशिया, पूर्वी एशिया और प्रशांत, चीन।
  - वृद्धि/धीमी गिरावट: उप-सहारा अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन।
  - गरीबों की सबसे बड़ी सघनता: उप-सहारा अफ्रीका; 2030 तक, 10 में से ~ 9 चरम गरीबों के वहां रहने की उम्मीद है।
- **अलग-अलग देश अलग-अलग गरीबी रेखाओं का उपयोग करते हैं**: क्योंकि जीवन यापन की राष्ट्रीय लागत, आर्थिक स्थिति और सामाजिक अपेक्षाएं अलग-अलग होती हैं। अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएँ **मानकीकरण के** लिए \$2.15/दिन का उपयोग करती हैं।
- ❖ **गरीबी और सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)**
- **संयुक्त राष्ट्र एसडीजी का लक्ष्य 2030 तक गरीबी को समाप्त करना** और शांति, समृद्धि, स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता और स्थिरता को बढ़ावा देना है।
- **SDG 1 – गरीबी नहीं:**
  - लक्ष्य: 2030 तक सभी रूपों में गरीबी को कम से कम आधा कम करना।
  - भारत की घटती गरीबी इस लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- ❖ **भारत में गरीबी के कारण**
- 1. **ऐतिहासिक कारक:**
  - औपनिवेशिक नीतियों ने पारंपरिक उद्योगों (जैसे, कपड़ा, हस्तशिल्प) को नष्ट कर दिया।
  - 1980 के दशक तक कम आर्थिक विकास ने रोजगार के अवसरों को सीमित कर दिया।
- 2. **कृषि और रोजगार:**
  - हरित क्रांति ने उत्पादकता में सुधार किया लेकिन मुख्य रूप से चुनिंदा क्षेत्रों में।
  - शहरी प्रवास के कारण कम, अनियमित आय → झुग्गी-झोपड़ियों के निर्माण के साथ अनौपचारिक कार्य (रिक्षा चालक, विक्रेता, घरेलू कामगार) हुए।
- 3. **आय असमानता और भूमि वितरण:**
  - भूमि और संसाधनों तक असमान पहुंच ने भेदता को बढ़ा दिया।
  - भूमि सुधार नीतियों को अक्सर प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया जाता है।
- 4. **सामाजिक-सांस्कृतिक कारक:**
  - सामाजिक दायित्वों और धार्मिक समारोहों पर खर्च करने से बचत कम हो जाती है।
  - छोटे किसानों के बीच ऋणग्रस्तता गरीबी को बनाए रखती है।

## ❖ भारत में गरीबी विरोधी उपाय

### रणनीतियों

- आर्थिक विकास को बढ़ावा देने से रोजगार पैदा होते हैं, आय बढ़ती है और शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश को प्रोत्साहित किया → /
- लक्षित गरीबी कार्यक्रम कमजोर समूहों पर ध्यान केंद्रित → /

### प्रमुख कार्यक्रम

प्रोग्राम	वस्तुनिष्ठ	प्रमुख विशेषताएं
मनरेगा (2005)	आजीविका सुरक्षा	ग्रामीण क्षेत्रों में 100 दिनों का मजदूरी रोजगार/ परिवार; महिलाओं के लिए 1/3 नौकरियां; सतत विकास पर केंद्रित
पीएम पोषण शक्ति अभियान	पोषण और शिक्षा में सुधार	स्कूल फीडिंग प्रोग्राम (कक्षा I-VIII), ड्रॉपआउट को कम करता है, वंचित बच्चों को लक्षित करता है
प्रधान मंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (2016)	मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व देखभाल, सुरक्षित प्रसव, निजी चिकित्सकों को संलग्न करता है	
प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूआई, 2016)	महिला सशक्तिकरण और स्वच्छ खाना पकाने	बीपीएल, एससी/ एसटी, वनवासियों के लिए मुफ्त एलपीजी कनेक्शन; पहली रिफिल शामिल है; पर्यावरणीय स्थिरता; महिलाओं के नाम पर जारी

## ❖ आगे की चुनौतियाँ

- लगातार असमानताएं: ग्रामीण बनाम शहरी, अंतर-राज्यीय, सामाजिक और आर्थिक समूह।
- आय-आधारित गरीबी उपाय सीमित हैं:
  - शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी की सुरक्षा, लैंगिक समानता, जातिगत भेदभाव या मानवीय गरिमा तक पहुंच का लाभ न उठाएं।
- व्यापक अवधारणा – मानव गरीबी: नीति आयोग के राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एनएमपीआई) जैसे बहुआयामी उपायों की आवश्यकता है।
- गरीबी में कमी के प्रमुख कारक:
  - सतत आर्थिक विकास
  - सार्वभौमिक शिक्षा
  - जनसंख्या नियंत्रण
  - महिला और कमजोर वर्ग सशक्तिकरण

### 1. भारत में गरीबी रेखा का अनुमान कैसे लगाया जाता है?

- गरीबी रेखा एक आय या उपभोग स्तर है जिसके नीचे एक व्यक्ति को गरीब माना जाता है।
- ऐतिहासिक रूप से, भारत में, यह न्यूनतम कैलोरी आवश्यकताओं पर आधारित था:
  - ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कैलोरी/दिन
  - शहरी क्षेत्रों में 2100 कैलोरी/दिन
- गणना में भोजन, कपड़े, जूते, ईंधन, बिजली, शिक्षा और चिकित्सा आवश्यकताएं शामिल थीं।
- प्रति व्यक्ति न्यूनतम व्यय निर्धारित करने के लिए इन वस्तुओं की कीमतों को उनकी भौतिक मात्रा आवश्यकताओं से गुण किया गया था, जिसने गरीबी रेखा को परिभाषित किया था।
- आज, भारत स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर सहित आय से परे गरीबी को मापने के लिए राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एनएमपीआई) का भी उपयोग करता है।

### 2. क्या आपको लगता है कि गरीबी के आकलन की वर्तमान पद्धति उचित है?

- ऐश्वरण:
  - बहुआयामी संकेतकों (स्वास्थ्य, शिक्षा, जीवन स्तर) के साथ आय/ उपभोग उपायों को जोड़ती है।
  - अभाव की अधिक समग्र तस्वीर प्रदान करता है।
- विपक्ष:
  - अकेले आय-आधारित उपाय शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सुरक्षा तक पहुंच की अनदेखी करता है।
  - कैलोरी मानदंड बदलती जीवन शैली या क्षेत्रीय विविधताओं को प्रतिबिंधित नहीं कर सकते हैं।
  - एनएमपीआई अभी भी सामाजिक भेदभाव, मानसिक कल्याण और नौकरी की सुरक्षा को पकड़ नहीं सकता है।

### 3. 1993 से भारत में गरीबी के रुझान का वर्णन कीजिए

- **1993-94:** एचसीआर ~45%, गरीबों की संख्या ~404 मिलियन।
- **2004-05:** एचसीआर घटकर 37% हो गया, लेकिन जनसंख्या वृद्धि के कारण गरीबों की संख्या ~ 407 मिलियन रही।
- **2011-12:** एचसीआर घटकर 22% हो गया, गरीबों की संख्या ~270 मिलियन।
- **2015-21 (बहुआयामी):** गरीबी 25% से घटकर 15% → गई, ~13.5 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बच गए।
- शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में तेज गिरावट देखी गई।

### 4. भारत में गरीबी के प्रमुख कारणों पर चर्चा कीजिए

- **ऐतिहासिक कारक:** औपनिवेशिक नीतियों ने पारंपरिक उद्योगों को नष्ट कर दिया।
- **1980 के दशक तक कम आर्थिक विकास** → कम रोजगार के अवसर थे।
- **कृषि सीमाएं:** हरित क्रांति से केवल कुछ क्षेत्रों को लाभ हुआ।
- **शहरी अनौपचारिक रोजगार:** रिक्षा चालक, विक्रेता, घरेलू कामगार कम, अनियमित आय → /
- **आय असमानता:** असमान भूमि और संसाधन वितरण।
- **सामाजिक-सांस्कृतिक कारक:** सामाजिक दायित्वों, धार्मिक समारोहों पर खर्च।
- **ऋणग्रस्तता:** छोटे किसान गरीबी में फंसे हुए उच्च ब्याज पर उधार लेते हैं।

### 5. उन सामाजिक और आर्थिक समूहों की पहचान करें जो भारत में गरीबी के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं

- **सामाजिक समूह:** अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी)
- **आर्थिक समूह:**
  - ग्रामीण कृषि प्रयोगशाला
  - शहरी दिहाड़ी मजदूर
- **अन्य कमज़ोर समूह:** भूमिहीन परिवार, महिलाएं, बुजुर्ग, महिलाएं

### 6. भारत में गरीबी की अंतरराज्यीय असमानताओं का लेखा-जोखा दीजिए

- **सबसे कम एचसीआर (2019-21):** कर्नाटक, तमिलनाडु, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र (<10%)
- **उच्चतम एचसीआर:** बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान
- **भिन्नता के कारण:**
  - केरल → मानव संसाधन विकास पर फोकस
  - पश्चिम बंगाल → भूमि सुधार
  - आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु → खाद्यान्त का सार्वजनिक वितरण

### 7. वैश्विक गरीबी के रुझानों का वर्णन करें

- **दक्षिण एशिया:** गरीबी 13% से घटकर 11% → (2017-21)
- **उप-सहारा अफ्रीका:** 36.6% से मामूली गिरावट → 35% (2017-19)
- **चीन:** 2020 में अत्यधिक गरीबी ~ 0.1%
- **लैटिन अमेरिका और कैरिबियन:** 4.4% → 4.6% (2017-21) से मामूली वृद्धि
- **दुनिया भर में गरीबों की संख्या:** दक्षिण एशिया: 233 मिलियन → 207 मिलियन (2017-21)
- **वैश्विक प्रवृत्ति:** अत्यधिक गरीबी घट रही है, लेकिन उप-सहारा अफ्रीका 2030 तक अत्यधिक गरीबों के बहुमत को धारण करेगा (10 में ~ 9)

### 8. भारत में गरीबी कम करने में सरकार की भूमिका का वर्णन कीजिए

- **आर्थिक विकास:** रोजगार पैदा करता है, आय बढ़ाता है, शिक्षा और स्वास्थ्य निवेश को प्रोत्साहित करता है।
- **लक्षित गरीबी विरोधी योजनाएं:**
  - ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी रोजगार → मनरेगा
  - प्रधानमंत्री पोषण स्कूली पोषण और शिक्षा →
  - पीएम सुरक्षित मातृत्व अभियान → मेटरनल & एएमपी; इनफेंट हेल्प
  - पीएम उज्ज्वला योजना ग्रामीण गरीबों के लिए एलपीजी कनेक्शन और महिला सशक्तिकरण →
- **नीतिगत हस्तक्षेप:** भूमि सुधार, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, महिला और सामाजिक सशक्तिकरण कार्यक्रम

## 9. मानव गरीबी से आप क्या समझते हैं?

- गरीबी सिर्फ कम आय नहीं है, बल्कि अभाव है:
  - शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी की सुरक्षा, आवास
  - स्वच्छ पानी, स्वच्छता और पोषण तक पहुंच
  - सामाजिक समानता (जाति/लिंग भेदभाव से स्वतंत्रता)
- मानव गरीबी जीवन की गुणवत्ता और क्षमता की कमी पर केंद्रित है, न कि केवल निवाह पर।

## 10. सबसे गरीब कौन है?

- अनुसूचित जनजाति (एसटी) → 43% गरीबी रेखा से नीचे
- ग्रामीण कृषि मजदूर, शहरी आकस्मिक श्रमिक, अनुसूचित जाति (एससी) → गरीबी रेखा से नीचे 29-34%
- वांचित सामाजिक समूहों में भूमिहीन दिहाड़ी मजदूरों को दोहरे नुकसान का सामना करना पड़ता है

## 11. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?

- ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति परिवार 100 दिनों का मजदूरी रोजगार प्रदान करता है
- आजीविका सुरक्षा को लक्षित करता है
- सूखा, वनों की कटाई, मिट्टी के कटाव → सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया
- एक तिहाई नौकरियां महिलाओं के लिए आरक्षित
- मजदूरी दरों में नियमित रूप से संशोधन किया जाता है

## 12. उपभोग आधारित गरीबी रेखा और एनएमपीआई आधारित गरीबी अनुमानों के बीच अंतर करना लक्षण उपभोग आधारित गरीबी

### एनएमपीआई-आधारित गरीबी

बहुआयामी अभाव (शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन स्तर)

जीवन की गुणवत्ता और क्षमता

पोषण, स्कूली शिक्षा, स्वच्छता, संपत्ति सहित 12 संकेतक

अधिक व्यापक लेकिन डेटा गहन

प्रवर्तन-बिंदु बुनियादी जरूरतों (भोजन, वस्त्र, आदि) पर आय या व्यय

फ्रॉकस न्यूनतम निवाह

माप कैलोरी मानदंड और व्यय

सीमाएँ गैर-मौद्रिक अभावों की उपेक्षा करता है

## 13. भारत में बहुआयामी गरीबों का अनुमान लगाने के लिए उपयोग किए जाने वाले संकेतकों की सूची बनाएं एनएमपीआई के 12 संकेतक:

- पोषाहार
- बाल-किशोर मूल्य दर
- मातृ स्वास्थ्य
- स्कूली शिक्षा के वर्ष
- स्कूल में उपस्थिति
- खाना पकाने का ईंधन
- स्वच्छता
- पीने का पानी
- फ्लैट आदि
- विद्युतधारा
- संपत्ति
- बैंक खाता